इकाई 6 रोमन साम्राज्य

इकाई की रूपरेखा

6.1 प्रस्तावना

आप इकाई पाँच में पढ़ चुके हैं कि सिकन्दर महान ने एक बृहद् साम्राज्य कायम किया परंतु यह अल्पजीवी रहा और उसकी मृत्यु के तुरंत बाद विभाजित हो गया। फारसी साम्राज्य के अंत और सिकन्दर के मकदूनियाई साम्राज्य की अखंडता के खंडित होने के साथ ही भूमध्यसागरीय क्षेत्र में एक नई राजनीतिक सत्ता का जन्म हुआ। रोमन साम्राज्य प्राचीन काल का सबसे बड़ा और दीर्घजीवी साम्राज्य साबित हुआ। इटली इसका मुख्यालय था और धीरे-धीरे इसमें समस्त भूमध्यसागरीय दुनिया समा गई। मकदूनियाई साम्राज्य के टूटने के तुरंत बाद रोमन साम्राज्य का भूमध्यसागरीय क्षेत्र में प्रवेश होने लगा। इस समय तक इटली के प्रमुख शहर रोम का सम्पूर्ण इतालवी प्रायद्वीप पर नियंत्रण हो चुका था।

रोम इटली की कई लैटिन भाषाई बस्तियों की तरह की एक बस्ती थी। लैटिन भाषा बृहद् भारोपीय भाषा समूहों का ही एक हिस्सा थी। लगभग 2000 बीसीई के बाद कई इंडो-यूरोपियन कबीले इटली में बस गए और एट्रस्कन (Etruscans) जैसे देशी और स्थानीय समूहों के साथ घुलमिल गए। रोम के इतिहास के आरंभिक चरण में लैटिन और एट्रस्कन लोगों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रोम इटली के मध्य भाग में ताइबर (Tiber) नदी के तट पर बसा हुआ है, जो प्रायद्वीप के पश्चिमी तट से बहुत दूर नहीं है। परम्परागत

रूप से माना जाता है कि इसकी स्थापना 753 बीसीई में हुई थी। शहर के परम्परागत इतिहास के अनुसार, सात पहाड़ियों और ताइबर नदी से घिरे इस शहर को 753 बीसीई में दीवार बनाकर पूरी तरह सुरक्षित कर लिया गया। यह रोम शहर था। परंतु इस तिथि की ऐतिहासिकता अभी तक स्थापित नहीं की जा सकी है। पुरातात्विक प्रमाणों को मानें तो इस शहर को बहुत बाद में, लगभग 550 बीसीई में पहली बार किलाबंद किया गया था। लगभग इसी समय से सात पहाड़ियों की बस्तियों में रहनेवाले लोगों की जनसंख्या में वृद्धि होने लगी। पहाड़ियों के निचले हिस्से पहले दलदल से भरे थे और यहां बसने से पहले यहां से पानी निकाला जाना बहुत आवश्यक था। दीवार से सटी ग्रामीण बस्तियां जल्द ही प्रमुख शहरी केन्द्र बन गईं।

रोम के आंरभिक इतिहास के बारे में हमारा ज्ञान काफी कम है। परम्परा के अनुसार, रोम में 510 बीसीई में ही गणतंत्र की स्थापना हो चुकी थी। राजतंत्र को समाप्त किया जा चुका था। इस तिथि के बाद से नगर पर कुलीन-तंत्र का शासन कायम हुआ जिसमें रोम का धनी लैटिन अभिजात वर्ग शामिल था। इस प्रकार जिन साम्राज्यों की चर्चा हमने पिछली इकाइयों में की है उनसे रोमन साम्राज्य काफी अलग था। रोमन साम्राज्य अपने आप में इसलिए अनूठा था क्योंकि लगभग पांच शताब्दियों तक यहां गणतांत्रिक सरकार रही और राजतंत्र व्यवस्था का यहां नामोनिशान नहीं था। कॉन्सुल कहे जाने वाले दो मजिस्ट्रेट सरकार के मुखिया हुआ करते थे, जिनका प्रतिवर्ष चुनाव हुआ करता था। अभिजात्य सत्ता का सबसे बड़ा तंत्र कुलीन-सभा या सीनेट थी। सीनेट रोमन गणतंत्र का सर्वोच्च निकाय था। इसके अलावा नागरिकों की सभाएं भी थीं। हालांकि गणतंत्र की शुरुआत में शासन चलाने में इनकी किसी प्रकार की हिस्सेदारी नहीं थी। गणतंत्र के अन्तिम 100 वर्षों में पेशेवर सेना की स्थापना की गई। सेना की टुकड़ियां युद्ध नेताओं के नियंत्रण में होती थी और ये राज्य के प्रति वफादार होने की बजाए अपने सेनानायकों के प्रति वफादार होते थे। ये सेनानायक आपस में भी लड़ते रहते थे और एक दल के रूप में भी रोमन साम्राज्य से युद्ध करते रहते थे। दास श्रम का व्यापक पैमाने पर उपयोग भी रोमन साम्राज्य की खास विशेषता थी।

6.2 रोमन साम्राज्य का विस्तार

रोमन गणतंत्र लगभग 510 से 27 बीसीई तक यानी 500 वर्षों तक कायम रहा। इसी दौरान नगर-राज्य एक विशाल और शक्तिशाली साम्राज्य के रूप में उभरा। इस प्रसार के लिए कई युद्ध और लड़ाइयां लड़ी गईं। यह प्रसार लम्बे समय तक चला जिसे हम दो अलग-अलग चरणों में विभक्त कर सकते हैं।

6.2.1 पहला चरण

रोमन साम्राज्य के प्रसार के प्रथम चरण में रोम ने पूरे इतालवी प्रायद्वीप को अपने नियंत्रण में लेने का प्रयास किया। यह प्रयत्न लगभग 500 से 280 बीसीई तक यानी दो शताब्दियों से अधिक चलता रहा। रोम ने मध्य इटली में अपना वर्चस्व कायम करके इस प्रक्रिया को शुरू किया। उसने उस क्षेत्र के लैटिन भाषाभाषियों से गठजोड़ किया। इन गठजोड़ों से रोम को गैर लैटिन राज्यों पर आक्रमण करने के लिए संसाधन प्राप्त हुए। लगभग दस वर्षों के संघर्ष के बाद 396 बीसीई में वेई पर कब्जा जमा लिया गया, जो मध्य इटली के गैर इतालवी राज्यों के खिलाफ चल रही लड़ाई की एक महत्वपूर्ण विजय थी। वेई रोम से लगा एक एट्रस्कन शहर था और उसका पुराना दुश्मन था। वेई की विजय से रोम को उसकी भूमि और धन के संसाधन प्राप्त हो गए। रोम अब अपने विस्तारवादी कार्यक्रम को

तेजी से बढ़ा सकता था। थोड़े समय के बाद केल्ट्स ने रोम पर आक्रमण किया और उसे नष्ट कर दिया। वे वहां से लूट का ढेर सारा सामान साथ ले गए। यह एक गंभीर झटका था। रोमवासी जल्दी ही इस झटके से उबर गए और रण भूमि में अपनी सर्वोच्चता कायम की। उन्होंने मध्य इटली के अधिकांश हिस्सों पर अपना कब्जा जमा लिया।

लगभग 295 बीसीई तक अधिकांश मध्य इटली को अपने कब्जे में करने के बाद रोम ने अपना ध्यान दक्षिणी इटली की ओर लगाया। पिछली इकाई में हमने इटली के इस हिस्से में यूनानियों की मौजूदगी की बात की थी। दक्षिण इटली के यूनानी राज्यों ने रोम के प्रसार के विरुद्ध संघर्ष किया। घमासान युद्ध के बाद अन्ततः ये राज्य रोम के अधीन हो गए। यहां रोम के विस्तार का पहला चरण पूरा होता है। इस चरण के अन्त तक सम्पूर्ण प्रायद्वीप प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में रोम के अधीन आ गया था।

6.2.2 दूसरा चरण

अब रोमवासी विस्तार के दूसरे चरण में प्रवेश करने के लिए पूरी तरह तैयार थे, जिसका मुख्य उद्देश्य भूमध्यसागरीय क्षेत्र में रोमन साम्राज्य का प्रभाव स्थापित करना था। इसलिए जल्दी ही रोमवासियों और कार्थेजिनियों (Carthaginians) के बीच लड़ाई छिड़ गई क्योंकि वे इस समय पश्चिम भूमध्यसागरीय क्षेत्र के शासक थे। कार्थेज उत्तरी अफ्रीकी तटीय क्षेत्र (आधुनिक ट्युनिशिया में) पर जिस जगह अवस्थित था उसका सामरिक महत्व था। यह मूलतः फोनिशियाई व्यापारिक बस्ती थी जो लगभग नवीं शताब्दी बीसीई में स्थापित हुई थी। यह एक बड़े साम्राज्य के रूप में विकसित हो गई, जिसमें पश्चिमी भूमध्यसागर के अधिकांश हिस्से (सिसली, स्पेन, आदि सहित) शामिल थे। दक्षिणी इटली में अपनी स्थिति मजबूत करने के बाद जब रोम ने सिसली पर कब्जा जमाना चाहा तो कार्थेजिनियाई साम्राज्य के साथ उन्हें घमासान और लम्बी लड़ाई लड़नी पड़ी। यहां यह ध्यान रखना चाहिए कि कार्थेज को हराकर ही पश्चिमी भूमध्यसागरीय क्षेत्र में रोमन साम्राज्य का विस्तार किया जा सकता था क्योंकि इस इलाके पर उनका अधिकार था। एक शताब्दी तक रोम कार्थेजिनियाई से लगातार युद्ध करता रहा।

रोम और कार्थेज के बीच हुए युद्धों को प्यूनिक युद्धों के नाम से जाना जाता है। कुल तीन प्यूनिक युद्ध हुए (पहला प्यूनिक युद्ध, 264-241 बीसीई; दूसरा प्यूनिक युद्ध, 218-201 बीसीई; तीसरा प्यूनिक युद्ध, 149-146 बीसीई)। तीसरे प्यूनिक युद्ध का अंत होते-होते कार्थेजिनियाई साम्राज्य पूरी तरह नष्ट हो गया और कार्थेज शहर पर कब्जा जमा लिया गया। कार्थेजिनियाई इलाकों पर पूरी तरह रोम का कब्जा हो गया। प्यूनिक युद्धों के दौरान कब्जा किए गए इलाकों को रोमन प्रांत बना दिया गया जिसमें सिसली, स्पेन और अफ्रीका थे (कार्थेज और इससे सटे उत्तरी अफ्रीका के इलाके को अफ्रीका कहा गया जो, मोटे तौर पर आज का ट्यूनिशिया है)।

इसके साथ ही साथ रोम ने मैसीडोनिया और यूनानी राज्यों को अपने नियंत्रण में ले लिया। मकदूनिया पर शासन करनेवाले एन्टेगोनिदों को हरा दिया गया (167 बीसीई) और अन्ततः 147 बीसीई में मकदूनिया को रोम में मिला लिया गया और यूनानी राज्यों पर अप्रत्यक्ष रूप से रोम का शासन हो गया जिन पर मकदूनिया से नियंत्रण रखा जाता था। इसके बाद रोम का प्रभाव मिस्र तक फैल गया। आपको याद होगा कि मिस्र पर टोलेमिद राजवंश का शासन था। इसे रोमन साम्राज्य के संरक्षण में ले लिया गया जिसका मतलब यह हुआ कि यह खुद–ब–खुद अपनी विदेशी नीति नहीं बना सकता था। पश्चिम अनातोलिया पर भी रोमन साम्राज्य का आधिपत्य हो गया और उसे एशिया प्रांत का हिस्सा बना दिया गया (इसे एशिया महाद्वीप का पर्याय नहीं माना जाना चाहिए)। इस प्रकार

दूसरी शताब्दी बीसीई के मध्य तक सम्पूर्ण भूमध्यसागरीय क्षेत्र प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में रोमन साम्राज्य के अधीन आ गया। इसके बाद भी दो शताब्दियों से ज्यादा तक रोमन साम्राज्य का विस्तार होता रहा परंतु इसके मुख्य क्षेत्र में कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ। भूमध्यसागर इस साम्राज्य का केन्द्र बिन्दु बना रहा। रोम के आगे के विस्तार पर नजर डालने के पूर्व उस रोमन राजनीतिक ढांचे और समाज को जानना और जांचना जरूरी है, जिस पर यह आधारित था।

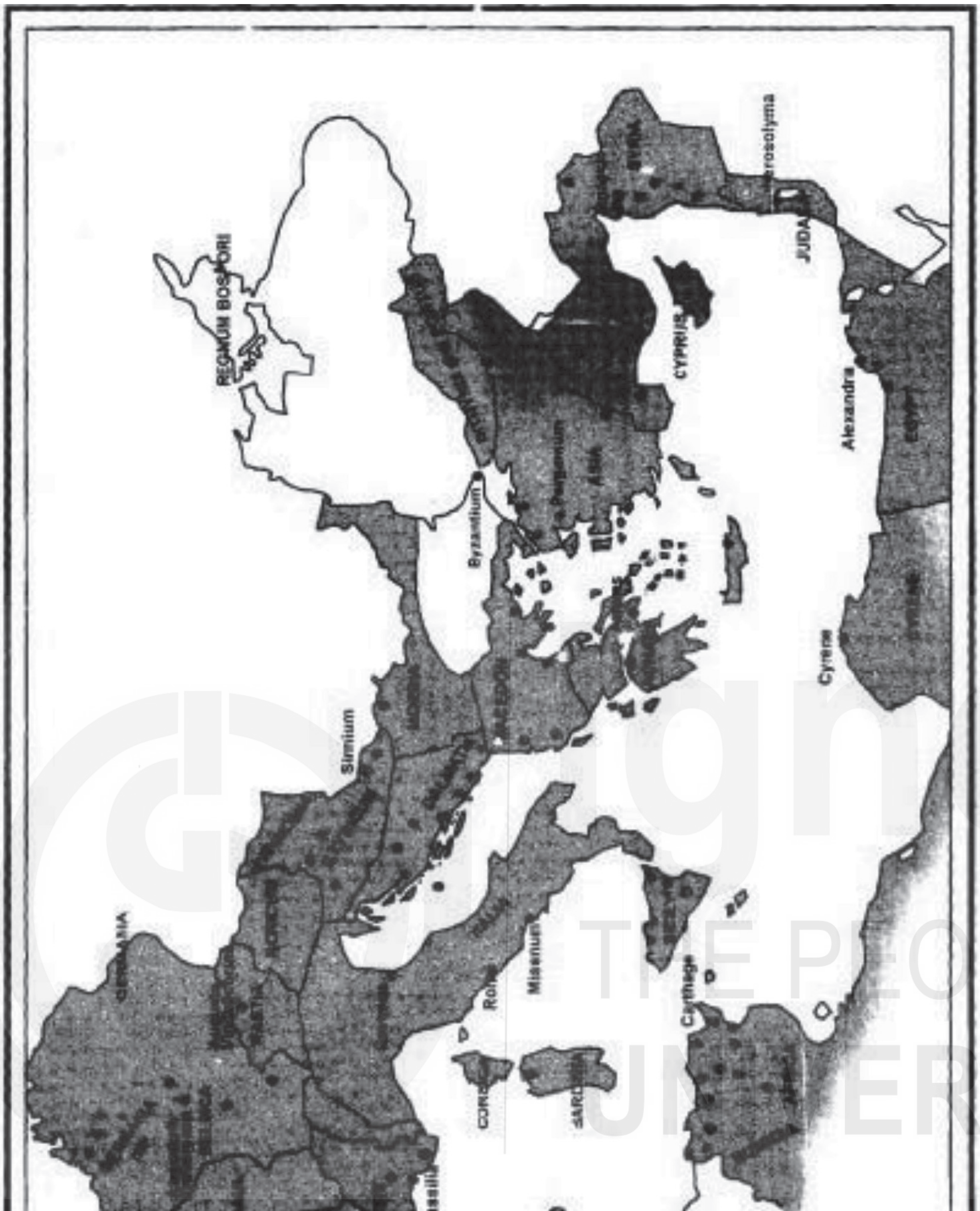
6.3 राजनीतिक ढांचा और समाज

आरंभिक रोमन राज्य में राजत्व के साथ-साथ सीनेट और सभा भी थी। सीनेट के पास कई अधिकार थे और राजाओं से लगातार इसका संघर्ष चलता रहता था। 1510 बीसीई में रोम में राजतंत्र का अंत हुआ और गणतंत्रीय राज्य की स्थापना हुई जो 27 बीसीई तक कायम रहा। आरंभ के गणतंत्र में राजनीतिक सत्ता पर रोमन अभिजात वर्ग का आधिपत्य था। अब, लगभग सम्पूर्ण सत्ता एक कुलीन-तंत्रीय परिषद सीनेट के हाथों में आ गई। केवल अभिजात वर्ग के सदस्य ही सीनेट के सदस्य हो सकते थे।

6.3.1 सामाजिक श्रेणियां और सीनेट

यहां हम आपके सामने रोम के सामाजिक ढांचे की एक खास विशेषता की ओर ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं। रोमन समाज के नागरिक स्थाई रूप से दो श्रेणियों में विभाजित थे : पैट्रिशियन श्रेणियां और प्लेबियन श्रेणियां। पैट्रिशियन एक संभ्रांत अनुवांशिक सीमित समाज था जबकि आम जनता को प्लेबियन कहा जाता था। दोनों ही श्रेणियां नागरिकों में शामिल थीं। रोमवासियों का इस प्रकार इन श्रेणियों में विभाजन थोड़ा बहुत भारतीय जाति व्यवस्था से मेल खाता है। यह विभाजन स्थाई था, जो किसी जाति में जन्म लेने के स्थाईत्व से मेल खाता है। एक नागरिक जन्मजात पैट्रिशियन या प्लेबियन होता था। केवल सम्पदा या राजनीतिक सत्ता प्राप्त कर कोई पैट्रिशियन या प्लेबियन नहीं बन सकता था। काफी लम्बे समय से कानून ने इन दोनों श्रेणियों के बीच विवाह की मनाही कर रखी थी। रोमन समाज में पैट्रिशियन आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक दृष्टि से दबंग समूह था। पैट्रिशियन में जन्म लेते ही व्यक्ति को सम्पदा, राजनीतिक शक्ति और उच्च सामाजिक और अनुष्ठानिक हैसियत मिल जाती थी। पैट्रिशियनों का रोमन धर्म पर भी एकाधिकार था। कई महत्वपूर्ण पुरोहित पदों के दरवाजे, लगभग गणतंत्र के अंत-अंत तक, प्लेबियनों के लिए बंद थे।

गणतंत्र के आरंभ के समय से ही सीनेट, जो कि राज्य का प्रमुख अंग था, पर पैट्रिशियन का एकाधिकार था। पैट्रिशियन पुरुष ही सीनेट के सदस्य हो सकते थे। प्लेबियन नागरिक (और सभी महिलाएं) इसमें शामिल नहीं हो सकते थे। आरंभिक गणतंत्र में सीनेट में 300 सदस्य थे। बाद में गणतंत्र में सीनेट के सदस्यों की संख्या बढ़ाकर 600 कर दी गई। सीनेट के सदस्यों का चुनाव इसके सदस्य ही किया करते थे। वे अतिरिक्त या नए सदस्यों का चुनाव खुद ही किया करते थे। आरंभ में शक्तिशाली अभिजातवर्गीय परिवारों के मुखिया, जिन्होंने राजतंत्र का अंत किया था, इसके सदस्य हुआ करते थे। सीनेट की सदस्यता आजीवन हुआ करती थी। सीनेट के पास व्यापक अधिकार हुआ करते थे जिन्हें औपचारिक रूप से सुपरिभाषित नहीं किया गया था। ज्यादातर सीनेटर बड़े भूमिपति थे। दूसरे शब्दों में रोमन गणतंत्र पर भूमिपति कुलीन-तंत्र का शासन था।



(स्केल पर आधारित नहीं)

रोमन साम्राज्य लगभग प्रथम ईसवी शताब्दी

6.3.2 गणतंत्र के पदाधिकारी

जैसा कि आपको पहले बताया जा चुका है कॉन्सलों के नाम से जाने जानेवाले दो चुने हुए मजिस्ट्रेट गणतंत्र के सर्वोच्च अधिकारी हुआ करते थे, जिनका वर्ष में एक बार चुनाव होता था। वे सीनेट की अध्यक्षता करते थे और कार्यकारी, न्यायिक और सैन्य दायित्व पूरा करते थे। गौरतलब है कि कॉन्सलों का चुनाव सभी नागरिकों (जिनमें प्लेबियनों भी शामिल थे) की सभा किया करती थी न कि सीनेट। कॉन्सल बिना किसी प्रतिबंध के पुनः चुनाव में खड़े हो सकते थे। 367 बीसीई तक केवल पैट्रिशियन ही कॉन्सल बन सकते थे। 367 बीसीई में लम्बी लड़ाई के बाद कॉन्सल का एक पद प्लेबियनों के लिए छोड़ दिया गया। काफी लम्बे समय तक यह प्रावधान मात्र औपचारिक बना रहा क्योंकि पैट्रिशियन का चुनाव प्रक्रिया पर नियंत्रण होता था और वे उम्मीदवारों का मनमुताबिक चयन कर सकते थे। बाद के गणतंत्र में प्लेबियन वास्तविक रूप से कॉन्सल के रूप में चुने जाने लगे। कॉन्सल बनकर ही कोई प्लेबियन सीनेट में प्रवेश कर सकता था क्योंकि कॉन्सल बनते ही वह सीनेटर बन जाता था। इस प्रकार गणतंत्र के अंत तक कुछ विशेषाधिकार प्राप्त प्लेबियन सीनेट के सदस्य बन गए थे।

रोमन गणतंत्र में कई अन्य चुने हुए मजिस्ट्रेट होते थे, जो शासन की देखरेख करते थे। दो शक्तिशाली मजिस्ट्रेट को सेन्सर्स कहा जाता था। उनका हर पांच वर्ष पर चुनाव होता था और एक साथ वे 18 महीनों तक एक पद पर रह सकते थे। अपने कार्यकाल में उन्हें रोम के नागरिकों की जनगणना करनी होती थी। यह आधुनिक जनगणना की अवधारणा से बिल्कुल अलग थी। इसमें केवल नागरिकों को गिना जाता था और प्रत्येक नागरिक की सम्पत्ति का ब्योरा लिखा जाता था। जनगणना के आधार पर ही रोमन राज्य में सम्पत्ति के मालिक होने पर चुनाव लड़ने और विभिन्न पदों पर बैठने की योग्यता का निर्धारण होता था। सेन्सर्स पर नागरिकों की नैतिकता नियंत्रित करने की जिम्मेदारी भी थी और ऐसे नागरिकों के खिलाफ उसे कार्यवाई करने का अधिकार था जो नैतिकता का पालन नहीं करते थे। सेन्सर्स के पास सार्वजनिक जमीनों को किराए पर देने और राज्य की ओर से ठेके देने का भी अतिरिक्त कार्यभार था। इन सब अधिकारों के कारण सेन्सर्स का पद बड़ा ही शक्तिशाली बन गया था। आरंभिक गणतंत्र में केवल पैट्रिशियनों (अधिकांशतः पूर्व) को ही सेन्सर्स के लिए चुना जाता था। बाद में कॉन्सलों के पद की तरह ही प्लेबियनों को सेन्सर्स के पद के लिए भी चुनाव लड़ने का अधिकार दिया गया। कॉन्सलों और सेन्सर्स के अलावा कई कनिष्ठ मजिस्ट्रेट भी थे जैसे – ऐडिल्स (Aediles) और क्वेस्टर्स (Quaestors)। इन मजिस्ट्रेटों का भी चुनाव हुआ करता था। सभी मजिस्ट्रेट अवैतनिक रूप से कार्य किया करते थे अर्थात राज्य से वेतन नहीं लिया करते थे।

6.3.3 पैट्रिशियनों और प्लेबियनों के बीच संघर्ष

आरंभिक गणतंत्र का इतिहास भूमिपति अभिजात वर्ग और आम जनता के बीच लगातार होने वाले संघर्षों से भरा पड़ा है। एक ओर जहां पैट्रिशियन समस्त राजनीतिक सत्ता अपने हाथ में लेने का प्रयास कर रहे थे, वहीं प्लेबियन अपनी मौजूदगी का एहसास कराने के लिए निरंतर दबाव बनाए हुए थे और मांग कर रहे थे, कि राजनीतिक प्रक्रिया में उनकी भी भागीदारी होनी चाहिए। गणतंत्र की स्थापना के बाद पैट्रिशियनों ने जो व्यवस्था बनाई उसमें उन्होंने सरकार में प्लेबियनों को कोई जगह नहीं दी। यह स्पष्ट था कि कृषक वर्ग की आसानी से उपेक्षा नहीं की जा सकती थी। रोमन अभिजात वर्ग को शहर की रक्षा के लिए और फिर इटली में प्रसार और विस्तार के लिए कृषक वर्ग की सहायता की नितांत आवश्यकता थी। रोमन सैन्य संगठन पूरी तरह कृषकों पर ही

आश्रित था जो सैन्य बल की प्रमुख शक्ति थे। सेना में सैन्य अधिकांशतः कृषक वर्ग से ही नियुक्त किए जाते थे और उन्हें कोई वेतन भी नहीं दिया जाता था। सैन्यों को अपने अस्त्र-शस्त्र खुद जुटाने पड़ते थे। सभी स्वस्थ पुरुषों को सेना में भरती होना पड़ता था। हम देख चुके हैं कि यूनान में भी सैन्य संगठन की यही पद्धति थी। जैसे-जैसे रोम की सीमाओं का विस्तार होने लगा, कृषक सैनिकों के समर्थन की आवश्यकता भी बढ़ती चली गई। इस विस्तार से आरंभ में कृषक वर्ग को थोड़ा बहुत लाभ मिला परंतु सबसे ज्यादा लाभ साम्राज्य के पैट्रिशियन अभिजात वर्ग को हुआ। साम्राज्य के विस्तार से अभिजात वर्ग आपार समृद्ध हो गया और अमीर तथा गरीब के बीच की खाई बढ़ गई। रोमन साम्राज्य के प्रथम चरण में कृषक वर्ग काफी राजनीतिक रियायतें पाने में सफल हुआ। इन रियायतों के तहत प्लेबियनों (किसान आमतौर पर प्लेबियन हुआ करते थे) के एक छोटे हिस्से को राजनीतिक सत्ता में थोड़ी सी हिस्सेदारी मिली।

6.3.4 सभा

रोमन सैन्य ढांचे में प्लेबियनों की भूमिका को देखते हुए यह बात आसानी से कही जा सकती है कि वे अपनी मांगों के लिए संघर्ष करने के लिए अपने को आसानी से संगठित कर सकते थे। रोम शहर की राजनीतिक व्यवस्था में एक कबीलाई सभा थी जो राजतंत्र के समय से ही अस्तित्व में थी। रोम के मूल कबीलों के वयस्क पुरुष इस सभा के सदस्य थे।

कोमिशिया क्यूरियाटा (Comitia Curiata)

रोमन सभा यानी सभी नागरिकों की सभा को कोमिशिया क्यूरियाटा के नाम से जाना जाता था। पैट्रिशियनों के सत्ता में आने और कुलीनतंत्रीय राज्य की स्थापना के साथ ही कोमिशिया क्यूरियाटा कमोबेश अपंग हो गया। औपचारिक रूप से इसकी मौजूदगी तो बनी रही पर इसके पास कोई ताकत न रही।

कोमिशिया क्यूरियाटा नातेदारी संबंधों पर आधारित सामाजिक इकाइयां थीं जिन्हें क्यूरिए (एक वचन क्यूरिया) कहा जाता था। रोम के मूल निवासी इस क्यूरिया नामक सामाजिक इकाई में विभाजित थे। क्यूरिए एक ऐसा कुल था, जिसमें पैट्रिशियन और प्लेबियन दोनों शामिल थे। जैसा कि हमें मालूम है आरंभिक गणतंत्र के दौरान रोम में तीस क्यूरिए थे। ये तीन कबीलों में बंटे हुए थे। प्रत्येक कबीले में दस क्यूरिए थे। पैट्रिशियन अपने मन मुताबिक सभा अध्यक्षों का चयन कर कोमिशिया क्यूरियाटा की कार्यवाही को नियंत्रित कर लेते थे। सभा में 'एक सदस्य एक मत' के सिद्धांत पर मतदान नहीं किया जाता था। प्रत्येक क्यूरिया सामूहिक रूप से मत देता था ताकि एक क्यूरिया का विचार एक साथ अभिव्यक्त हो। पैट्रिशियन वर्ग नातेदारी संबंधों का उपयोग करते हुए अपने-अपने क्यूरिए के विचारों को प्रभावित करते थे। वे समस्त क्यूरिया का प्रतिनिधित्व करते थे और अपनी बात सामने रखते थे। इस प्रकार आम नागरिक मूक दर्शक बने रहे। धीरे-धीरे अधिकांश सदस्यों की भागीदारी इतनी अप्रासंगिक हो गई कि सभा के इनके सत्रों में विचार-विमर्श करने तथा मतदान देने के लिए प्रत्येक क्यूरिया से एक आधिकारिक प्रतिनिधि भेजा जाने लगा।

कोमिशिया क्यूरियाटा की असमानता पर आधारित संरचना को देखते हुए इससे यह उम्मीद नहीं की जा सकती थी कि यह सभा प्लेबियनों के हितों को पूरा करेगी। प्लेबियनों के बढ़ते दबाव के परिणामस्वरूप नई सभा बनाने के लिए नागरिकों को एक बार फिर से अलग-अलग समूहों में बांटा गया।

कोमिशिया सेंच्यूरियाटा (Comitia Centuriata)

इस नई सभा को कोमिशिया सेंच्यूरियाटा कहा गया। कोमिशिया क्यूरियाटा की तरह ही कोमिशिया सेंच्यूरियाटा भी सभी रोमन नागरिकों (पैट्रिशियनों और प्लेबियनों) की सभा थी। इन दोनों सभाओं में मुख्य अन्तर यह था कि इनमें नागरिकों के समूह अलग-अलग ढंग से गठित किए गए थे। कोमिशिया सेंच्यूरियाटा में नागरिकों को 'सेंचुरिज' सौ की संख्या (100) में गोलबंद किया गया था। सेंचुरी रोम की सेना सबसे छोटी इकाई थी और अपने नाम के अनुरूप हरेक इकाई में 100 सदस्यों की भरती की गुंजाइश थी। परंतु व्यवहार में ये संख्याएं अलग-अलग होती थीं। आरंभ में कोमिशिया सेंच्यूरियाटा बिलकुल एक सैन्य संगठन लगती थी। सेंचुरिज की संख्या कुल मिलाकर 193 थी। इन 193 सेंचुरिज को पांच वर्गों में बांटा गया था। इन्हें सम्पत्ति के स्वामित्व के आधार पर विभाजित किया गया था। 193 सेंचुरिज को पांच वर्गों में विभाजित किया गया था परंतु इनका विभाजन समान नहीं था। अधिकांश सेंचुरिज पहले तीन वर्गों में रखे गए थे, जिसमें अभिजात वर्ग और बड़े भूमिपतियों को रखा गया था। कोमिशिया सेंच्यूरियाटा में सेंचुरी एक प्रतीकात्मक इकाई थी। प्रत्येक सेंचुरी में नागरिकों की संख्या एक समान नहीं थी। सेंचुरी के पहले दो वर्गों में कम नागरिक शामिल थे। दूसरी ओर सम्पत्तिविहीन गरीब नागरिक थे। इन नागरिकों को *प्रोलेटरी (Proletarii)* कहा जाता था। *प्रोलेटरी* सबसे निचला वर्ग था। यह वर्ग, हालांकि संख्या की दृष्टि से बहुत बड़ा था, परंतु उसे केवल एक सेंचुरी प्रदान की गई थी। इस प्रकार के वर्गीकरण से गरीब नागरिकों का सभा में भागीदारी का कोई अर्थ नहीं रह जाता था। कोमिशिया सेंच्यूरियाटा में प्रत्येक सेंचुरी के आधार पर वोट का निर्धारण किया गया था न कि 'एक व्यक्ति एक मत' के सिद्धांत के आधार पर (प्रत्येक सेंचुरी का एक मत होता था)। इस प्रकार अभिजात वर्ग और बड़े भूमिपतियों के पास, अल्पसंख्यक होने के बावजूद, अधिक मत थे। सभा की कार्यवाही और कामकाज पर पैट्रिशियन का कड़ा नियंत्रण था।

कोमिशिया सेंच्यूरियाटा की स्थापना संभवतः 450 बीसीई के आस-पास हुई (या इसी समय यह महत्वपूर्ण बनी)। जबतक गणतंत्र कायम रहा तबतक अधिकांशतः यह नागरिकों की सभा बनी रही। कोमिशिया सेंच्यूरियाटा ही कॉन्सलों और सेन्सर्स का चुनाव करवाती थी और सारे कानून यहीं से पारित किए जाते थे। युद्ध और शांति की घोषणा भी इस सभा का विशेष अधिकार था। कोमिशिया क्यूरियाटा अब केवल सामाजिक और धार्मिक प्रकृति के कुछ मामलों की ही देखरेख किया करती थी।

कौंसिलियम प्लेबिस (Concilium Plebis)

एक ओर जहां कोमिशिया क्यूरियाटा और कोमिशिया सेंच्यूरियाटा सभी रोमन नागरिकों की सभा थी वहीं एक सभा ऐसी भी थी जहां केवल प्लेबियन ही शामिल हो सकते थे। इस प्लेबियन सभा को कौंसिलियम प्लेबिस कहा गया। कौंसिलियम प्लेबिस में प्लेबियनों की समस्याओं पर विचार-विमर्श होता था। जल्द ही यह प्लेबियन सभा संस्थाकृत हो गई और इसने अपना ढांचा खुद निर्मित किया। इसने अपनी कार्य पद्धति तय की; इसके अपने अधिकारी चुने जाते थे। 494 बीसीई में प्लेबियनों ने दो अधिकारियों का चयन किया और रोमन राज्य पर दबाव डाला कि इन्हें कौंसिलिसम प्लेबिस का अधिकारिक प्रतिनिधि माना जाए। राज्य द्वारा अधिकारिक रूप से इसे स्वीकार कर लिया गया। इन अधिकारियों को ट्रिब्यून्स कहा जाता था, जो प्लेबियनों के प्रवक्ता होते थे। ट्रिब्यून्स के उत्तरदायित्व लगातार बढ़ते चले गए। इस कारण इन आधिकारियों की संख्या भी बढ़ती गई। 48 बीसीई तक दस ट्रिब्यून कार्यरत थे। कौंसिलियम प्लेबिस हर वर्ष इन ट्रिब्यून्स

का चुनाव किया करता था। अमीर प्लेबियनों के लिए इस पद को प्राप्त करने के लिए काफी होड़ थी क्योंकि ट्रिब्यून के रूप में चुने जाने के बाद एक प्लेबियन को राजनीतिक सत्ता में भागीदारी मिल जाती थी। यह एक ऐसी शुरुआत थी जिसका गणतंत्र के आंरभ में नामोनिशान नहीं था।

6.3.5 विभिन्न श्रेणियों में टकराव

प्राचीन रोम के परम्परागत काल विभाजन में दो शताब्दियों या 510 से 287 बीसीई के बीच के काल को 'श्रेणियों के टकराव' (पैट्रिशियनों और प्लेबियनों) के रूप में जिक्र किया जाता है। 494 बीसीई में ट्रिब्यून्स को दी गई मान्यता इस संघर्ष का पहला महत्वपूर्ण चरण था। इसके बाद प्लेबियनों के संघर्षों में चार और प्रमुख और महत्वपूर्ण पड़ाव आए।

i) प्लेबियन सबसे पहले अपनी इस मांग पर जोर दे रहे थे कि कानून संहिता लिखित होनी चाहिए ताकि न्यायिक प्राधिकरण द्वारा मनमाने ढंग से इसका उपयोग न किया जा सके सके। लिखित कानून न होने के कारण पैट्रिशियन न्यायिक अधिकारों का मनमाने ढंग से उपयोग किया करते थे। प्लेबियनों ने सीनेट को यह धमकी दी कि यदि रोमन राज्य का समुचित कानूनी ढांचा न बनाया गया तो वे सेना में भरती होना छोड़ देंगे। सीनेट ने इसके लिए 10 सदस्यीय आयोग ('डेसेमविर्स' Decemvirs) बनाया, जिसका अध्यक्ष एप्पिस क्लाडियस (Appius Claudius) को बनाया गया। इस आयोग ने रोमवासियों के लिए कानून बनाए। इस कानून को ''कोड ऑफ द ट्वेल्व टेबल्स'' (बारह सारणियों के कानून) कहा जाता है। कोमिशिया सेंच्यूरियाटा की स्थापना के आस-पास ही लगभग 450 बीसीई में इसकी स्थापना की गई थी। ये ''ट्वेल्व टेबल्स'' रोमन कानून के आधार बने। दुर्भाग्यवश इन ''ट्वेल्व टेबल्स'' का पूरा ब्यौरा उपलब्ध नहीं है। इस संहिता के निर्माण से पैट्रिशियनों द्वारा न्यायिक अधिकार के मनमाने उपयोग की संभावना को काफी कम कर दिया।

ii) 367 बीसीई में प्लेबियनों के लिए एक कॉन्सलों का दरवाजा खुल गया। यह दूसरी प्रमुख उपलब्धि थी। कॉन्सलों के पद के लिए प्लेबियन वर्ग के किसी व्यक्ति का वास्तविक चुनाव तो काफी बाद में हुआ। कोमिशिया सेंच्यूरियाटा (जिसमें पैट्रिशियन के मत सबसे ज्यादा थे) कॉन्सलों का चुनाव करते थे और सीनेटर ही इसके लिए उम्मीदवारों का नाम प्रस्तावित किया करते थे। इसलिए रोमन राज्य के उच्चस्थ मजिस्ट्रेट पद के लिए एक प्लेबियन का चुना जाना इतना आसान नहीं था। गणतंत्र के अंतिम 100 वर्षों में ही प्लेबियन नियमित रूप से कॉन्सल के पद पर चुने जाने लगे। ये प्लेबियन कॉन्सल अपने कॉन्सल के पद के कारण सीनेट के सदस्य भी बन सके। इस रास्ते का इस्तेमाल करते हुए प्लेबियन परिवार के कई सीनेटरों ने बाद के गणतंत्र में काफी प्रसिद्धि पाई (उदाहरणस्वरूप ग्रेकस (Gracchus) बंधु और मार्क एन्टोनी)।

iii) 326 बीसीई में एक और निर्णायक और महत्वपूर्ण सुधार हुआ। रोमन कानून में एक बड़ा भारी दमनात्मक कानूनी प्रावधान था, जिसका संबंध औपचारिक अनुबंध या *नेक्सम* (Nexum) के कड़ाई से पालन करने से जुड़ा था। यदि कोई रोमवासी ऋण लेते समय कोई औपचारिक अनुबंध या *नेक्सम* करता था, जिसमें कर्ज लेनेवाला व्यक्ति अपने को गिरवी रख देता था और वह समय पर कर्ज नहीं चुका पाता था तो उसे ऋण बंधन में बंधना पड़ता था। युद्धों में निरंतर भागीदारी के साथ-साथ कई तरह की आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के लिए

ऋणग्रस्तता किसान की एक जटिल समस्या बन गई थी। जब किसान या अन्य गरीब लोग कर्ज नहीं चुका पाते थे तो उन्हें दास बना लिया जाता था। इस प्रकार बड़े भूमिपति *नेक्सम* के सहारे स्वतंत्र किसानों को गुलाम मजदूर के रूप में परिवर्तित करने लगे। इसलिए *नेक्सम* का उन्मूलन प्लेबियनों के लिए एक महत्वूपर्ण मुद्दा था। 326 बीसीई में एक कानून बनाकर ऋण न चुकाए जाने की स्थिति में रोमवासी नागरिकों को गुलाम बनाए जाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

iv) चौथी उपलब्धि राजनीतिक स्तर पर ज्यादा महत्वपूर्ण है और आरंभिक गणतंत्र के दौरान दोनों श्रेणियों के बीच होनेवाले संघर्ष का एक प्रमुख बिन्दु है। 287 बीसीई में प्लेबियन ट्रिब्यून्स को पूरे तौर पर मजिस्ट्रेट के अधिकार दे दिए गए। जब प्लेबियनों ने सेना में भरती होने से इनकार करने की चेतावनी दी तो इससे संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई। इसी समय दक्षिणी इटली के यूनानी राज्यों पर कब्जा जमाने की योजना बन रही थी। 287 बीसीई में कौंसिलियम प्लेबिस (प्लेबियन की सभा) के निर्णयों को रोमन राज्य के लिए लागू करना अनिवार्य हो गया। इस प्रकार ट्रिब्यून्स को कौंसिलियम प्लेबिस के निर्णयों को लागू करने का अधिकार मिल गया और इसे रोमन राज्य का पूर्ण अनुमोदन प्राप्त था तथा इसका उल्लंघन करनेवालों को दंड भी दिया जाता था। इस कानून से कौंसिलियम प्लेबिस की महत्ता बहुत बढ़ गई। इसके निर्णयों को कानूनी अधिकार प्राप्त हो गए। इसके साथ ही साथ ट्रिब्यून्स का पद भी एक शक्तिशाली मजिस्ट्रेट का पद हो गया। 287 बीसीई की इन घटनाओं से विभिन्न श्रेणियों के बीच होनेवाले संघर्षों के अन्त के रूप में देखा जा सकता है।

यहां यह बात समझ लेनी चाहिए कि सीनेट – जिसमें पैट्रिशियन वर्ग के सदस्यों का वर्चस्व रहा – ने कभी भी रोमन राज्य में अपनी श्रेष्ठ स्थिति को त्यागा नहीं। इसने रोमन राज्य के मामले में रोमन नागरिकों की सभाओं और कौंसिलियम प्लेबिस को थोड़ी बहुत हिस्सेदारी और रियायत देने का ही काम किया। परंतु निर्णय लेने की प्रक्रिया पर अभी भी सीनेट का पूरा नियंत्रण था। इससे एक नया अन्तर्विरोध पैदा हुआ, जिसके फलस्वरूप अन्ततः गणतंत्र का अंत हो गया।

6.3.6 प्लेबियनों में सामाजिक विभेदीकरण

गणतंत्र के आरंभ में अधिकांश प्लेबियन किसान थे। गणतंत्र के अंतिम दौर में प्लेबियन श्रेणियों में भी सामाजिक अन्तर आ गए थे। एक ओर प्लेबियनों में एक छोटा वर्ग बन गया था। इन संभ्रांत लोगों ने सत्ता और सम्पदा प्राप्त करने के लिए राजनीतिक रियायतों का उपयोग अपने हित में किया। कुछ मुट्ठी भर प्लेबियन परिवारों के लोग सीनेटर बने और वे भी पैट्रिशियन अभिजात वर्ग की तरह सुख सुविधाएं उठाने लगे। प्लेबियन का यह छोटा समूह गणतंत्र के अंतिम दौर में रोम के शासकीय कुलीनतंत्र का हिस्सा बन गया। इन प्लेबियन संभ्रांत लोगों और अन्य प्लेबियनों के बीच हितों का कोई जुड़ाव नहीं था और कृषक वर्ग के अधिकारों के लिए लड़ने में उनकी कोई रुचि नहीं थी।

प्लेबियन अंतिम कतार में खड़े सम्पत्तिविहीन नागरिक थे। आरंभिक गणतंत्र में अधिकांश प्लेबियनों के पास अपनी जमीन थी परंतु तीसरी शताब्दी बीसीई आते-आते उसमें से अधिकांश के हाथों से जमीन निकल गई। *कोमिशिया सेंच्यूरियाटा* में इन सम्पत्तिहीन नागरिकों को, जिन्हें *प्रोलेटरी* कहा जाता था, केवल एक सेंचुरी आवंटित की गई। प्लेबियन संभ्रांत वर्ग और भूमिहीन वर्ग के बीच कृषक वर्ग खड़ा था। रोम के छोटे किसानों

को *एसिडुई* कहा जाता था। रोम की थल सेना में सबसे ज्यादा संख्या *एसिडुई* की ही थी। 326 बीसीई में ऋणबंधन के उन्मूलन के बाद ऋण न चुकाए जाने की स्थिति में कृषकों को दास बनाए जाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। इसके बावजूद किसान अपनी भूमि को जोतों को गंवाते रहे। विस्तारवादी युद्धों में हिस्सा लेने के कारण उनकी स्थिति और बुरी होती गई और यह सिलसिला कई शताब्दियों तक चला। 146 बीसीई के बाद किसान भूमि सुधार के लिए संघर्ष करने लगे। भूमि सुधार का प्रश्न केवल *एसिडुई* की दुरावस्था और माली हालत के कारण ही पैदा नहीं हुआ बल्कि इसलिए भी यह मांग की जाने लगी क्योंकि बिना जमीन के किसान सैन्य सेवा के लिए जरूरी संसाधन जुटाने में अपने को असमर्थ महसूस करने लगे। अभिजात वर्ग को भूमि सुधार मंजूर नहीं था। उनके हिंसक विरोध के कारण जमीनों का पुनर्वितरण संभव नहीं हो सका।

6.4 टकराव और विस्तार

गणतंत्र के अंतिम सौ वर्षों में कई परिवर्तन देखने को मिलते हैं। अलग-अलग सेनानायकों के अधीन पेशेवर सेना का निर्माण ऐसा ही एक महत्वपूर्ण परिवर्तन था। ये सेनाएं अपने सेनानायकों के प्रति वफादार थीं। अपनी ताकत और संसाधन बढ़ाने के लिए ये सेनानायक युद्ध किया करते थे। ताकत बढ़ने पर ये आपस में तो लड़ा ही करते थे, गणतंत्र पर नियंत्रण करने के लिए सीनेट से भी संघर्ष करते थे। इस भाग में हम इन महत्वपूर्ण पहलुओं की संक्षेप में चर्चा करेंगे।

6.4.1 पेशेवर सेना और युद्ध नेता (वार लौर्ड)

रोमन गणतंत्र में छोटे खेतिहर किसान सेना की मुख्य ताकत थे। इन सैनिकों को अपने अस्त्र-शस्त्र और युद्ध के साजोसामान का इंतजाम खुद ही करना पड़ता था। किसानों की खस्ता हालत, जिसका जिक्र हम पिछले भाग में कर चुके हैं, का असर सेना की सेहत पर भी पड़ा।

जमीन के पुनर्वितरण के विरोध और *एसिडुई* के क्षीण होते आकार के कारण सैनिकों की भर्ती की समस्या का तुरंत हल निकालना जरूरी लगने लगा। भूमिहीन नगारिकों के लिए अपने संसाधनों का उपयोग कर सैन्य सेवा प्रदान करना संभव नहीं रह गया। आरंभ में अधीनस्थ क्षेत्रों से अतिरिक्त टुकड़ियां जुटाकर आंशिक समाधान प्रस्तुत किया गया। राज्य के खर्चे पर कुछ घुड़सवार भी रखे गए। 100 बीसीई में मारियस (Marius) ने सैन्य व्यवस्था में आमूल चूल परिवर्तन कर डाला। वह कई वर्षों से कॉन्सल के पद पर आसीन था और राजनीतिक और सैन्य क्षेत्र में एक जाना माना व्यक्तित्व था। उसने रोम के सैन्य संगठन को परिवर्तित किया और वेतनभोगी टुकड़ी रखने की शुरुआत की। रोम के सैनिकों को अब राज्य से वेतन मिलने लगा। पेशेवर स्थाई सेना के निर्माण, जिसका नेतृत्व सेनानायक किया करते थे और जो अभिजात वर्ग के सदस्य होते थे, ने रोम में राजनीतिक टकराव को एक नई दिशा में मोड़ दिया। अबतक *एसिडुई* सैन्य युद्ध से लौटकर अपने गांव जाकर खेतों में खेती किया करते थे। वेतनभोगी सैन्य स्थाई रूप से युद्ध अभियानों पर जाते थे और साम्राज्य के दूर-दराज इलाकों में उन्हें इटली से बाहर लम्बे समय तक रहना पड़ता था। सेना की इकाइयों को एक पहचान मिली और यह एक सुगठित रूप में विकसित हुईं। इससे पहले सेना में इस प्रकार के संगठन का अभाव था। ये इकाइयां अपने सेनानायकों की अंधभक्त थीं, जिनकी योजना और रणनीति पर चलना वे अपना कर्तव्य और उपलब्धि मानते थे। अधिक सफल सेनानायकों के मामले में यह कथन सटीक लागू होता है। युद्ध में विजय प्राप्त करते ही सैनिकों को लूट-खसोट करने का पूरा मौका दिया जाता था।

अभिजात वर्ग के सेनानायक अपने अधीन विशाल सुप्रशिक्षित सेनाओं की सहायता से रोमन राज्य पर अपना नियंत्रण स्थापित करने के लिए खूनी संघर्ष कर सकते थे। 100 बीसीई और 27 बीसीई के बीच की अवधि में कई ऐसे शक्तिशाली सेनानायक हुए : खुद मारियस, सुल्ला (Sulla), क्रेसस (Crassus), पॉम्पी (Pompey), जुलियस सीजर, मार्क एन्टोनी और आगस्तस। धीरे-धीरे सेना का उपयोग असंतोष को दबाने और अभिजात वर्ग के हितों को पूरा करने के लिए किया जाने लगा। सेना खुद रोम की राजनीति में हस्तक्षेप करने की स्थिति में आ गई।

एक वर्ग के रूप में *एसिडुई* की अनुपस्थिति के कारण गणतंत्र का स्वरूप बिलकुल बदल गया। मध्य इटली में रोमन नागरिक मुख्यतः सम्पत्तिहीन प्लेबियन थे। जीवनयापन का कोई साधन न होने के कारण वे रोम शहर में जमा हो गए थे जहां सस्ता अनाज उपलब्ध था। यह देखकर कि अधिकांश *प्रोलेटरी* सस्ता आनाज भी नहीं खरीद सकते, रोमन राज्य इन अति निर्धन नागरिकों को मुफ्त अनाज बांटने लगा। ऐसा अनुमान लगाया गया है कि लगभग 50 बीसीई के आस-पास 320,000 नगारिकों को मुफ्त अनाज मुहैया कराया जाता था। इस भूखे नंगे प्रोलेटरी का उपयोग अभिजात वर्ग अपने राजनीतिक संघर्ष में आसानी से कर सकता था।

6.4.2 विस्तार के लिए युद्ध

गणतंत्र के आखिरी दौर में एक तरफ रोम में सामाजिक और राजनीतिक बदलाव आए और दूसरी तरफ पश्चिम एशिया में बड़े-बड़े सैन्य अभियान चलाए गए। इस क्षेत्र के हेलेनेस्टिक राज्य को अपने नियंत्रण में लेने के उद्देश्य से रोम लगातार पश्चिमी भूमध्यसागरीय क्षेत्र और पश्चिम एशिया के मामले में हस्तक्षेप कर रहा था। मकदूनिया पर कब्जा जमा लिया गया, यूनानी राज्यों को रोम का शासन स्वीकार करने के लिए बाध्य किया गया, पश्चिमी अनातोलिया को एशिया का एक प्रांत बना दिया गया, सेल्यूसिड (जिनका अब केवल सीरिया पर शासन था) युद्ध में हार गए, और मिस्र को संरक्षण में ले लिया गया। पूरब में अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए और विरोध को दबाने के लिए रोमवासियों को एक बड़ी सेना रखनी पड़ती थी। इस विशाल सेना के नायकत्व के सवाल पर रोम के राजनीतिज्ञों और सेनानायकों के बीच हमेशा मतभेद रहता था। कुछ समय के लिए मारियस को पूरब की कमान सौंपी गई, सुल्ला ने इसका विरोध किया जो उस समय पैट्रिशियन अभिजात वर्ग के रूढ़िवादी समूह का अगुआ था। सुल्ला इस समय पूरब में नियुक्त था और उसने मारियस को कमान देने से इनकार कर दिया। उल्टे वह अपनी सेना के साथ रोम की ओर बढ़ा और जबरन सत्ता अपने हाथ में लेने का प्रयास किया। इसके परिणामस्वरूप सुल्ला और मारियस के समर्थकों के बीच गृहयुद्ध छिड़ गया।

इस गृहयुद्ध में, जो 88 से 82 बीसीई तक चला, सुल्ला को बढ़त मिली। 86 बीसीई में मारियस की मृत्यु के बाद उसका काम और आसान हो गया। इसके बाद उसने अनातोलिया और यूनान पर चढ़ाई की और इन इलाकों में रोम के खिलाफ होनेवाले विद्रोहों को दबाया। इससे उसका सम्मान बढ़ा और सेना पर उसकी पकड़ मजबूत हुई। वह अपनी इस ताकत के बल पर रोम साम्राज्य का शासक बन बैठा। 82 बीसीई में सुल्ला रोम वापस आया और सेना की मदद से उसने अपने विरोधियों को निर्ममता से कुचल दिया। 81 बीसीई में उसने अपने को तानाशाह (डिक्टेटर) घोषित किया। रोमन राज्य में यह एक औपचारिक पद था और इसके पास निरंकुश सत्ता होती थी; किसी आपात स्थिति से निपटने के लिए किसी तानाशाह की नियुक्ति की जा सकती थी परंतु छह महीने से ज्यादा इस पद पर कोई नहीं बैठ सका। सुल्ला ने इस नियम का उल्लंघन किया। उसने अपनी तानाशाही अनिश्चित काल के लिए बढ़ा दी। अपने व्यक्तिगत कारणों से सुल्ला ने 79 बीसीई में अवकाश ले लिया और अगले वर्ष उसकी मृत्यु हो गई।

सुल्ला की तानाशाही का काल गणतंत्र के इतिहास में एक नए मोड़ का परिचायक है। इसके बाद से ताकतवर सेनानायकों और युद्धपतियों का रोमन साम्राज्य पर नियंत्रण होने लगा। इन युद्धपतियों के आपसी हिंसक टकराव के कारण गणतंत्र तेजी से ध्वस्त होने लगा। सुल्ला के अवकाश ग्रहण के समय सेना की स्थिति बड़ी ही नाजुक थी। पूरब को पूरी तरह नियंत्रण में नहीं लिया जा सका था और पश्चिम में रोम के खिलाफ एक जबरदस्त विद्रोह हुआ था। मारियस के कुछ समर्थकों ने सुल्ला की तानाशाही के खिलाफ आंदोलन छेड़ दिया था। स्पेन प्रांत इस विद्रोह का प्रमुख केन्द्र था। सेरटोरियस (Sertorius) के नेतृत्व में इस आंदोलन ने छापामार युद्ध का रूप ले लिया। 80 और 72 बीसीई के बीच यह प्रांत लगभग स्वतंत्र रहा। खुद इटली में 73 बीसीई में एक जबरदस्त दास विद्रोह फूट पड़ा और यह 71 बीसीई तक चलता रहा। इस विद्रोह का नेतृत्व स्पार्टाकस नामक एक दास कर रहा था और यह प्राचीन यूनान-रोम काल का सबसे जबरदस्त दास विद्रोह था। स्पार्टाकस विद्रोह के नाम से जाना जानेवाला यह आंदोलन दक्षिणी इटली के एक बड़े हिस्से में छा गया और जबरदस्त संघर्ष के बाद ही इसे दबाया जा सका।

इस स्थिति में रोम को बड़े पैमाने पर सेना की लामबंदी करनी पड़ी। सैन्य अभियानों के इस युग में रोम की राजनीति में चार युद्धनेता उभर कर सामने आएः लुकुलस (Lucullus), क्रेसस, पॉम्पी ओर जूलियस सीजर। इनके बीच के शक्ति संघर्ष अंतिम वर्षों में गणतंत्र पर हावी रहे। इन सबकी ताकत उस सेना पर निर्भर थी जिनके वे सेनापति थे और उन्हें सेना की विजय से सम्मान प्राप्त होता था। ये रोम की राजनीति के विख्यात व्यक्तित्व थे। पॉम्पी ने सेरटोरियस को पराजित किया था। क्रेसस ने स्पार्टाकस विद्रोह को दबाया था और लुकुलस ने पूरब में कई लड़ाइयां जीती थीं। 70 बीसीई में क्रेसस और पॉम्पी कॉन्सल चुने गए और इस प्रकार उनकी राजनीतिक स्थिति मजबूत हुई। सेरटोरियस पर विजय प्राप्त करने के बाद जुलियस सीजर को उस प्रांत में व्यवस्था कायम करने के लिए स्पेन भेज दिया गया।

67 बीसीई में लुकुलस को पूरब से वापस बुला लिया गया। बाद में उसने सार्वजनिक जीवन से अवकाश ले लिया। इसके बाद तीन युद्धनेता बच गएः क्रेसस, पॉम्पी, और जूलियस सीजर। लुकुलस के स्थान पर पॉम्पी को तैनात किया गया। उसे व्यापक अधिकार दिए गए। इससे पहले रोम के किसी भी सेनानायक को इतने व्यापक अधिकार नहीं दिए गए थे। उसे इस बात का पूरा अधिकार दिया गया कि वह जैसे चाहे वैसे पूरब की समस्या का समाधान कर सकता है। 63 बीसीई तक अनातोलिया पर रोमन सत्ता पूर्णतः स्थापित हो गई। इसके बाद पॉम्पी ने सीरिया के सेल्यूसिड इलाके को भी अपने कब्जे में ले लिया। सीरिया रोम का एक प्रांत बन गया और एन्टियोक (Antioch) को इसका मुख्यालय बनाया गया। इन सब गतिविधियों के कारण रोम पश्चिम एशिया की एक प्रमुख राजनीतिक ताकत बन गया।

6.4.3 सीनेट से युद्ध नेताओं का संघर्ष

रोमन सीनेट ने पॉम्पी और दो अन्य प्रमुख युद्ध नेताओं, जूलियस सीजर और क्रेसस की ताकत को कम करने का प्रयास किया परंतु वे वैसा नहीं कर पाए। इसका सबसे बड़ा कारण यह था कि सेना पर सीनेट का नहीं बल्कि इन युद्ध नेताओं का नियंत्रण था परंतु सीनेट और सेनानायकों के बीच हुए टकराव से एक गंभीर राजनीतिक संकट तो पैदा हो ही गया। संकट की इस घड़ी में रोम राज्य की सत्ता अपने हाथ में ले लेने के लिए पॉम्पी, जूलियस सीजर और क्रेसस एक हो गए। 60 बीसीई में इन तीनों युद्ध नेताओं ने एक गठबंधन बनाया। इस गठबंधन को फर्स्ट ट्रिओमविरेट (Triumvirate) कहा

गया ('ट्रिओमविरेट' का अर्थ यह है कि सत्ता तीनों में समान रूप से विभाजित रहेगी)। ट्रिओमविरेट का ऐतिहासिक महत्व इस बात से समझा जा सकता है कि इस समय तक गणतंत्र का संवैधानिक तंत्र टूट चुका था और रोम में इस समय कोई प्रभावी सरकार नहीं थी। अपने हाथों में सारी सत्ता समेटकर क्रेसस, पॉम्पी और जूलियस सीजर ने एक नया प्रयोग किया। रोम की सारी सत्ता इस ट्रिओमविरेट (त्रिमूर्ति) में सिमटकर रह गई। गणतंत्र की अन्य संस्थाएं समाप्त नहीं की गई परंतु उन्हें पंगु बना दिया गया।

56 बीसीई में इस त्रिमूर्ति का फिर से नवीनीकरण किया गया। हालांकि 56 बीसीई के तुरंत बाद इस व्यवस्था में समस्याएं पैदा होने लगीं। क्रेसस उत्तरी मेसोपोटामिया के युद्ध में (53 बीसीई) मारा गया। इसके बाद पॉम्पी और जूलियस सीजर का संबंध बिगड़ने लगा। उनके बीच सत्ता के लिए हुए संघर्ष ने पूर्णरूपेण गृह युद्ध का रूप ले लिया। 48 बीसीई में पॉम्पी पराजित हुआ और मिस्र भाग गया जहां उसकी हत्या कर दी गई। अब जूलियस सीजर रोम का सर्वोच्च सेनानायक था। 48 बीसीई में वह अपार शक्ति के साथ तानाशाह बन गया। 47 बीसीई में उसे 10 वर्षों के लिए तानाशाह बनाया गया। सीजर द्वारा निरंकुश शासक बनने की प्रक्रिया को अभिजात वर्ग के कुछ हिस्सों ने चुनौती दी। 44 बीसीई में उसकी हत्या कर दी गई। अभिजात वर्ग का वह धड़ा इस षडयंत्र में शामिल था जिसके नेता यह नहीं चाहते थे कि जूलियस सीजर गणतंत्र को राजतंत्र में परिवर्तित कर दे। यह बहस का विषय है कि जूलियस सीजर का अन्तिम उद्देश्य यह था या नहीं। परंतु इसमें कोई सन्देह नहीं है कि वह गणतंत्र के आधारभूत ढांचे को बदलने का प्रयोग कर रहा था और इसका हिंसक विरोध हुआ।

जूलियस सीजर के समर्थकों ने बहुत जल्द ही मार्क एन्टोनी, लेपिडस (Lepidus) और आक्टोवियन सीजर के नेतृत्व में अपने को पुनर्संगठित किया। मार्क एन्टोनी जूलियस सीजर का सर्वप्रमुख साथी था जबकि लेपिडस उसकी तानाशाही के शासन में 'मास्टर ऑफ द हॉर्स' (यह तानाशाह से जुड़ा एक महत्वपूर्ण पद) के पद पर आसीन था। आक्टोवियन जूलियस सीजर का चचेरा पोता था और उसे सीजर के दत्तक पुत्र का दर्जा दिया गया था। मार्क एन्टोनी, लेपिडस और आक्टोवियन ने 43 बीसीई में एक नई त्रिमूर्ति बनाई जिसे दूसरी त्रिमूर्ति के नाम से जाना गया। एक वर्ष के अन्दर इस त्रिमूर्ति ने सारे विरोधियों को परास्त कर दिया। ब्रूटस और कैसियस (जो जूलियस सीजर की हत्या के षडयंत्र में शामिल थे) को 42 बीसीई के युद्ध में पराजित कर दिया गया। इसके तुरंत बाद लेपिडस को त्रिमूर्ति से हटने को बाध्य किया गया तथा मार्क एन्टोनी और आक्टोवियन साम्राज्य के सम्पूर्ण शासक बन गए। इसके बाद दोनों में मतभेद उभरे जो एक खुले युद्ध के रूप में परिवर्तित हो गया। इन दोनों के बीच युद्ध चलता रहा और पूरब में रोम साम्राज्य का अभियान भी चलता रहा। मार्क एन्टोनी ने मिस्र के टोलेमिड शासक क्लिओपात्रा से समर्थन मांगा। मार्क एन्टोनी और क्लिओपात्रा की संयुक्त फौज 31 बीसीई में यूनान की मुख्य भूमि के पश्चिमी तट एक्टिअम (Actium) में आक्टोवियन द्वारा पराजित हो गई। 30 बीसीई तक मार्क एन्टोनी और क्लिओपात्रा की मृत्यु हो गई और रोम की राजनीतिक सत्ता पूरी तरह आक्टोवियन के हाथ में आ गई। 27 बीसीई में आक्टोवियन ने आगस्तस (भव्य/महान) की उपाधि धारण कर ली और उसे आज भी इसी नाम से जाना जाता है। इसके बाद उसने अपने को *प्रिंसेप्स* यानी रोम का पहला और महत्वपूर्ण नागरिक घोषित किया। औपचारिक रूप से 27 बीसीई में गणतंत्र का अंत हुआ और प्रिंसिपेट का आरंभ।

आगस्तस 14वीं सीई में अपनी मृत्यु के समय तक यानी चार दशकों तक रोमन साम्राज्य का सर्वोच्च शासक बना रहा। 81 बीसीई में सुल्ला की तानाशाही में गणतंत्र के बदलने

की जो प्रक्रिया आरंभ हुई थी उसे आगस्तस ने सफलतापूर्वक पूरा किया। आगस्तस जनता की रोम की गणतंत्रात्मक परम्पराओं से जुड़ी भावनाओं को आहत नहीं करना चाहता था। इन परम्पराओं का शताब्दियों पुराना इतिहास था और इसे तुरंत त्यागा नहीं जा सकता था। गणतंत्र की अधिकांश राजनीतिक संस्थाएं कायम रखी गईं और अधिकांश सार्वजनिक अधिकारियों के पदनाम पहले जैसे ही रखे गए। आगस्तस ने खुद कोई शाही पदवी धारण नहीं की। *प्रिंसेप्स* केवल प्रथम नागरिक का द्योतक था। वस्तुतः उसके समकालीनों के समक्ष यह स्पष्ट नहीं था कि उस समय एक राजतंत्रीय सरकार आकार ग्रहण कर रही है। जब हम आगस्तस के शासनकाल को एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखते हैं और उसके कार्यों और कदमों के परिणामों को समझने का प्रयास करते हैं तब यह समझ में आता है कि उसने किस तरह गणतंत्र के स्थान पर राजतंत्र की स्थापना की।

यहां यह बता देना जरूरी है कि प्रिंसिपेट के अधीन रोमन राजतंत्र की कुछ असामान्य विशेषताएं थीं जिसके तार वस्तुतः रोम के लम्बे गणतंत्रीय अतीत से जुड़ते थे। एक ओर आगस्तस ने गणतंत्र के मौलिक स्वभाव को रूपांतरित कर दिया परंतु गणतंत्र से राजतंत्र की ओर संक्रमण तुरंत नहीं हुआ बल्कि यह यात्रा धीरे-धीरे चली और कई पीढ़ियों तक यह सिलसिला जारी रहा। काफी लम्बे समय तक आगस्तस और उनके उत्तराधिकारियों ने यह भ्रम बनाए रखा कि गणतंत्र समाप्त नहीं हुआ है। सिद्धांतः सम्राट (*प्रिंसेप्स*) की सत्ता और शासन करने का अधिकार दिव्य शक्ति प्रदत्त नहीं था बल्कि नागरिकों के मर्जी पर आधारित था। शासक या राजा को गणतंत्र के अभिन्न हिस्से के रूप में देखा जाता था। व्यवहार में इसका मतलब यह है कि उसे सीनेट और सेना की स्वीकृति प्राप्त करनी होती थी। 27 बीसीई के बाद अन्य गणतंत्रीय संस्थाएं तो नाममात्र के लिए मौजूद थीं लेकिन सीनेट में अभी भी कुछ ताकत बची थी। हालांकि कोई औपचारिक नियम नहीं था कि सम्राट का चुनाव कैसे किया जाएगा (आनुवांशिक उत्तराधिकार नियम अपवाद था), सम्राट को सीनेट और सेना का समर्थन आवश्यक था और वे ही उसकी वैधता पर मुहर लगाते थे और इस प्रकार उसका शासन अपेक्षाकृत स्थाई होता था। सम्राट, सीनेट और सेना नए राजनीतिक ढांचे के तीन प्रमुख घटक थे। आगस्तस की सफलता इस बात में निहित है कि उसने इन तीनों घटकों के बीच समुचित समन्वय और संतुलन बनाए रखा। उसने इस नई व्यवस्था को जो स्थायित्व प्रदान किया उसी से प्रिंसिपेट बना जो 250 वर्षों तक कायम रहा।

रोमन साम्राज्य प्रिंसिपेट के नेतृत्व में आगे बढ़ता चला गया और 117 सीई में यह अपने शीर्ष पर पहुंच गया। इस साम्राज्य में स्पेन (आज का पुर्तगाल सहित), गॉल (आधुनिक फ्रांस और बेल्जियम), ब्रिटेन, इटली और डेन्यूब नदी के दक्षिण में पड़ने वाले मध्य और पश्चिमी यूरोप के इलाके शामिल थे। डेन्यूब के उस पार स्थित रोमानिया भी रोमन साम्राज्य का हिस्सा था। पूरब की ओर अनातोलिया, सीरिया, फिलिस्तीन, उत्तरी मेसोपोटामिया के हिस्से और मिस्र शामिल था। रोमन शासन में उत्तरी अफ्रीका में, सहारा मरुभूमि और भूमध्यसागर के सारे इलाके शामिल थे। रोमन साम्राज्य के अधीन शताब्दियों तक पूरा भूमध्यसागरीय इलाका राजनीतिक रूप से एकीकृत था और इसकी अर्थव्यवस्था के फलने-फूलने के लिए यह अनिवार्य था। भूमध्यसागरीय इलाके पर नियंत्रण करने से लम्बी दूरी के व्यापार और संचार में काफी मदद मिली।

6.5 दास प्रथा

पिछली इकाई में हमने देखा कि व्यापक पैमाने पर फैली दास प्रथा यूनानी समाज का एक प्रमुख हिस्सा थी। वास्तव में प्राचीन रोम में दास प्रथा अपने चरम विकास पर पहुंच

गई थी। रोमन अभिजात वर्ग ने साम्राज्य के पश्चिमी इलाकों (खासतौर पर स्पेन, गॉल और इटली) में बड़ी-बड़ी जमीनें हासिल कर ली थी। इन इलाकों पर कब्जा जमाए जाने से दास प्रथा के प्रसार की संभावनाएं और बढ़ गईं। पश्चिमी यूरोप की कृषीय व्यवस्था में बड़े आकार की जमींदारियों की बहुतायत थी जिसे *लैटिफुंडिया (Latifundia)* नाम से जानते थे। क्लासिकी यूनान में बड़े भूमिपतियों की सम्पदाओं और *लैटिफुंडिया* के आकार में कोई तुलना ही नहीं है। यूनान में बड़ी से बड़ी ये भूसम्पत्तियां ज्यादातर 75 से 100 एकड़ की हुआ करती थीं। 100 एकड़ से ज्यादा की सम्पत्तियां यदा कदा ही थीं। रोमन अभिजात वर्ग की *लैटिफुंडिया* में कई हजार एकड़ होना आम बात थी। बड़े *लैटिफुंडिया* में तो कई लाख एकड़ की परिसम्पदाएं हुआ करती थीं।

लैटिफुंडिया में कृषि-श्रम दासों द्वारा कराया जाता था। यूनान में खेतों का आकार छोटा था इसलिए वहां दास प्रथा के विस्तार की संभावनाएं अपेक्षाकृत कम और सीमित थीं जबकि *लैटिफुंडिया* में असंख्य दासों को लगाया जा सकता था। युद्ध और लूट से बराबर इन परिसम्पदाओं में दासों की आपूर्ति बनी रहती थी। अनुमानतः केवल इटली प्रायद्वीप में 225 और 42 बीसीई के बीच दासों की जनसंख्या 600,000 से बढ़कर 30 लाख हो गई। आगस्तस और उसके ठीक बाद के उत्तराधिकारियों के शासनकाल में पश्चिमी प्रांतों में रोमन शासन के सुदृढ़ीकरण के फलस्वरूप स्पेन और गॉल में कृषि और दास प्रथा में तेजी से बढ़ोत्तरी हुई। आगस्तस के शासनकाल में शांति और स्थायित्व का सबसे ज्यादा फायदा रोम के शासकीय वर्ग को मिला जिन्होंने अपनी सम्पदा में दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ोत्तरी की।

रोमन कानून के तहत दास को सम्पत्ति माना गया था। दास के लिए आमतौर पर सर्वस शब्द का प्रयोग किया जाता था। दासों को एक वस्तु के रूप में देखा जाता था जिन्हें पशु की तरह बाजार में बेचा और खरीदा जा सकता था। रोमन अर्थव्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्र में दास श्रम की बहुलता थी। कृषि, खनन और हस्तशिल्प उत्पादन में इन्हें सबसे ज्यादा लगाया जाता था। हस्तशिल्प उद्योगों में नब्बे प्रतिशत काम दासों से कराया जाता था। सरकारी दफ्तरों में दासों को लिपिक के रूप में भी नियुक्त किया जाता था। अधिकांश दास *लैटिफुंडिया* में काम करते थे। खेतों और खानों में काम करनेवाले दासों को अधिकतर जंजीरों से बांधकर रखा जाता था। रोमन राज्य दासों पर कड़ा नियंत्रण रखता था और इसके लिए उनपर जुल्म ढाता था। उन्हें अलग-अलग रखने और उनके बीच एकता कायम न होने देने के लिए शासन बराबर चौकन्ना रहता था और सतर्कता से काम करता था। वे अलग-अलग भाषाएं बोलते थे और उनके बीच कोई नातेदारी का संबंध नहीं था। राज्य के कड़े नियंत्रण के बावजूद इन दासों ने कई बार आंदोलन और विद्रोह किया। तीन प्रमुख दास विद्रोहों के प्रमाण हमें मिलते हैं। पहला दास विद्रोह सिसली में हुआ (136-132 बीसीई)। इस द्वीप का दूसरा विद्रोह 104-120 बीसीई में हुआ। 73-71 बीसीई में हुआ दास विद्रोह सबसे ज्यादा गंभीर था जिसे स्पार्टाकस विद्रोह के नाम से जाना जाता है, जो कापुआ (आधुनिक नेपल्स के निकट) में आरंभ हुआ था। इन सभी को निर्ममतापूर्वक कुचल दिया गया। जिस तादाद में प्राचीन रोम में दासों का उपयोग किया जाता था, मानव इतिहास में किसी भी समाज में इतने व्यापक पैमाने पर दासों का उपयोग नहीं किया गया। यूनान की तरह रोम दासों से युक्त समाज नहीं था बल्कि यह एक दास समाज था। प्राचीन यूनानी-रोमन समाज को दास समाज कहा जा सकता है क्योंकि उत्पादन के लिए व्यापक पैमाने पर दास श्रमिकों को काम पर लगाया गया था।

6.6 सारांश

इस इकाई मे रोमन गणतंत्र के लगभग 500 वर्षों के इतिहास का परिचय आपने प्राप्त किया। एक इकाई में इन सभी मुद्दों को विस्तृत रूप में बताना बहुत मुश्किल था। इसलिए हमने कुछ चुनिन्द पहलुओं, विशिष्टताओं और प्रमुख घटनाओं पर ही विचार-विमर्श किया।

रोमन साम्राज्य का विस्तार लम्बे समय में हुआ जिसका प्रथम चरण 280 बीसीई तक चला और दूसरा चरण दूसरी शताब्दी बीसीई के मध्य तक चलता रहा। इस इकाई के अध्ययन काल की अंतिम शताब्दी में पश्चिम एशिया और अफ्रीका पर चढ़ाइयां की गईं। इस इकाई में रोमन साम्राज्य के राजनीतिक ढांचे और सामाजिक संगठन पर विशेष बल दिया गया। सामाजिक श्रेणियों, सीनेटों और सभा का विश्लेषण भी किया गया है। सामाजिक श्रेणियों में संघर्ष होने से रोमन साम्राज्य में प्लेबियनों की शक्ति बढ़ी। पेशेवर सेना के निर्माण ने साम्राज्य के इतिहास की अंतिम शताब्दी में इतिहास की धारा को प्रभावित किया। रोमन सभ्यता दास श्रम पर इस हद तक आश्रित थी कि जब दूसरी शताब्दी बीसीई के अन्त में दासों की आपूर्ति में कमी आई तो अर्थव्यवस्था को गंभीर स्थिति का सामना करना पड़ा। आर्थिक समस्याओं के साथ-साथ राजनीतिक संकट भी आरंभ हो गया जिससे अन्ततः खुद रोमन साम्राज्य का पतन हो गया। इकाई 10 में (उत्तर रोमन विश्व) इस पतन के इतिहास पर नजर डाली जाएगी।

6.7 बोध प्रश्न

1) रोमन साम्राज्य के विस्तार पर चर्चा कीजिए।

2) रोम में सामाजिक श्रेणियों और प्लेवियनों की भूमिका का विश्लेषण कीजिए।

3) पेशेवर सेना के उदय की प्रक्रिया और विस्तार के लिए युद्धों को स्पष्ट कीजिए।

4) रोमन गणतंत्र में दास संस्था पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।